Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

गोरखपुर मण्डल के कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके समायोजन क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ0 रीता सिंह
शोध निर्देशक, एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षक–शिक्षा विभाग
तिलकधारी महाविद्यालय, जौनपुर
राजकुमार सिंह
शोधकर्त्ता, (शिक्षाशास्त्र)
वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0

सारांश– प्रस्तुत अध्ययन **गोरखपुर मण्डल के कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके समायोजन क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन** करना है। अध्ययन में उद्देश्य के रूप में उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं को सम्मिलित कर समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के रूप में गोरखपुर मण्डल में स्थित कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों का चयन कर उसमें अध्ययनरत् 50 बालिकाओं का चयन किया गया है। बालिकाओं के सामाजिक– आर्थिक स्तर को मापने के लिए सुनील कुमार उपाध्याय एवं अल्का सक्सेना द्वारा निर्मित 'उपाध्याय–सक्सेना सोशियो–इकोनॉमिक स्टेट्स स्केल' तथा समायोजन क्षमता से सम्बन्धित आँकड़े एकत्रित करने हेतु डॉ0 ए0के0पी0 सिंह और डा0 आर0पी0 सिंह के समायोजन क्षमता सूची का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये– कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् उच्च एवं मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं की अपेक्षा उच्च है अर्थात् कहा जा सकता है कि सामाजिक–आर्थिक स्तर का बालिकाओं के समायोजन क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

की–वर्ड – कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय, बालिका, सामाजिक–आर्थिक स्तर, समायोजन क्षमता, प्रभाव

प्रस्तावना–

यह एक सर्वविदित सत्य है कि शिक्षा किसी भी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के विकास की धुरी होती है। शिक्षा का सम्बन्ध सिर्फ साक्षरता से ही नहीं बल्कि शिक्षा चेतना अैर उत्तरदायित्व की भावना को जाग्रत करने वाला यंत भी है। शिक्षा को एक मापक या मैपाने या पैमाने के तौर पर देखा जाता है जिसके आधार पर व्यक्ति, राज्य या देश का मूल्यांकन किया जाता है और यदि इस मूल्यांकन के दृष्टि से हम 'भारत' में साक्षरता की स्थिति को देखें तो वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार देश में साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत है। पुरुषों की साक्षरता दर 82.14 प्रतिशत है एवं महिलाओं की 65.46 प्रतिशत है। अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय ने वर्ष 2000 में तय किया था कि शिक्षा 'मानवाधिकार' है, हर व्यक्ति को जीवन में विकास के समान अवसर मिलने चाहिए। उनके साथ सामाजिक पृष्ठभूमि, लिंग धर्म या उम्र के आधार पर भेदभाव नहीं होना चाहिए। उपर्युक्त कथन के आधार पर यदि भारतवर्ष की स्थिति को देखा जाये

तो यहाँ मानवाधिकार पर बड़ी–बड़ी चर्चा होती है किन्तु यदि वास्तविकता देखा जायें तो लिंग आधारित असमानता बालिकाओं के संदर्भ में जन्म लेने से पूर्व ही प्रारम्भ हो जाती है और यह जीवनपर्यन्त प्रत्येक अवस्था पर देखी जाती है। यह दुःखद स्थिति न सिर्फ बालिकाओं के लिए वरन् सम्पूर्ण राष्ट्र के विकास के मार्ग का प्रमुख अवरोध है जिसे शीघ्रता से दूर करना नितान्त आवश्यक है।

ग्रामीण बालिकाएँ एवं गरीब बालिकाएँ पारिवारिक, आर्थिक व सामाजिक कारणों से शिक्षा के आलोक से वंचित रह जाती है। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए वर्ष 1979–80 में ''अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम'' प्रारम्भ किया गया ताकि उन बच्चों को साक्षरता की दौड़ में समावेशित किया जा सके जो पारिवारिक, आथ्रिक या विद्यालय की सुविधा उपलब्ध नहीं होने की वजह से विद्यालय नहीं जा पाए। इस कार्यक्रम को व्यावहारिक रूप प्रदान करते हुए इसे शिक्षा गारन्टी योजना एवं वैकल्पिक व अभिनव शिक्षा योजनाओं के ाम से सर्वशिक्षा अभियान के तहत चलाया जा रहा है। वर्ष 1997 में प्रारम्भ की गई शिक्षा गारंटी योजना का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक बच्चो को उसके गाँव या इलाके के एक किलोमीटर के भीतर प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराना है।

बालिकाओं की समुचित शिक्षा की व्यवस्था के लिए कस्तूरबा बालिका विद्यालय कार्यक्रम जुलाई 2004 में तैयार किया। ये घरेलू विद्यालय अनुसूचित जाति/जनजाति, विमुक्त जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यक समुदाय की कन्याओं के लिए उच्च प्राथमिक स्तर की शिक्षा प्रदान करने के लिए खोले गए। यह कार्यक्रम उन क्षेत्रों में लागू किया गया जहाँ शैाकि स्तर पिछड़ा हुआ था, जहाँ पर स्त्रियों की शैक्षिक स्तर औसत से नीचे था। इस कार्यक्रम के तहत 75 प्रतिशत स्थान अनुसूचित जाति/जनजाति एवं अल्पसंख्यक कन्याओं के लिए आरक्षित किये गये शेष 25 प्रतिशत में गरीबी रेखा से नीचे की कन्याओं को प्राथमिक दी गई। कस्तूरबा बालिका विद्यालय कार्यक्रम का उद्देश्य ऐसी बालिकाएँ जो शाला से बाहर हैं अथवा प्रारम्भिम शिक्षा से वंचित हैं और उनके पारिवारिक कारणों से परिवार में में रहते हुए प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकती हैं उन्हें छात्रावास में रखकर प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकती हैं उन्हें छात्रावास में रखकर प्रारम्भिक शिक्षा सुविधा उपलब्ध कराना है। यह कार्यक्रम असम, आन्ध प्रदेश, अरूणांचल प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, जम्मू कश्मीर, मध्य प्रदेश, मणिपुर, महाराष्ट्र, मेघालय, मिजोरम, उड़ीसा, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, त्रिपुरा, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल और पश्चिमी बंगाल आदि 24 राज्यों में लागू किया गया। 11वीं पंचवर्षीय योजना के तहत् यह कार्यक्रम 50–50 के अनुपात में केन्द्र तथा राज्यों में विभक्त किया गया। 20,180 कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय भारत सरकार द्वारा मार्च 2007 में स्वीकृत किये गये, जिसमें से 1226 कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय राज्यों में कार्यक्रम के तहत आरम्भ हुए। इसमें 80853 कन्याओं ने अपना नामांकन कराया। इसमें 19823 अनुसूचित जाति (25 प्रतिशत), 23298 अनुसूचित जनजाति (29 प्रतिशत), 20137 अन्य पिछड़ा वर्ग (25 प्रतिशत) 13417 गरीबी रेखा से नीचे (17 प्रतिशत) और 4178 अल्पसंख्यक (5 प्रतिशत) शामिल थे। इस कार्यक्रम को चलाने के लिए भारत सरकार द्वारा 31.03.2007 तक 43552. 54 लाख रुपये अनुदान किये गये। सर्व शिक्षा अभियान यह मानकर चलता है कि स्कूल न जाने वाली बालिकाओं, विशेष रूप से सुविधावंचित समूहों की बालिकाओं को स्कूलों में लाने के लिए विशेष प्रत्यन करने की आवश्यकता है। उन छोटे–छोटे क्षेत्रों को जो बालिकाओं की शिक्षा के मामले में बहुत पिछड़े हुए हैं, लक्ष्य बनाने के लिए भारत सरकार ने सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत बालिकाओं के लिए कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालयों के एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम शुरू किया है।

सरकार द्वारा बालिकाओं को शिक्षा पथ पर अग्रसर करने हेतु बहुआयामी व्यूहरचना को क्रियान्वित करते हुए अनेक योजनाओं, छात्रवृत्ति, निःशुल्क व्यवस्था, यूनिफार्म, आवागमन हेतु साईकिल व स्कूटी व्यवस्था व बसों में निःशुल्क यात्रा की व्यवस्था कर रही है। इसके साथ ही मध्यान्ह भोजन व्यवस्था जैसे व्यापक कार्यक्रम का सूत्रपात किया गया। स्कूल भवनों व आधारभूत सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने तथा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने के साथ ही रोजगारपरक व व्यवसायोन्मुख शिक्षा के विकास पर भी बल दिया गया है। निःसन्देह रूप से, इन विविध योजनाओं के कारण बालिकाओं के स्कूलों में नामांकन, ठहराव आदि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

लेकिन अभी भी विचारणीय प्रश्न यह है कि इन सभी के संदर्भ में बालिकाओं का परिदृश्य संतोषजनक नहीं है। अभी भी अनेक बालिकाओं के लिए शिक्षा के द्वार बंद है तथा अनेक बालिकाएँ बीच में ही पढ़ाई छोड़ने के लिए बाध्य है। गरीबी, बाल विवाह, पर्दाप्रथा, अभिभावकों की निरक्षरता एवं जागरूकता की कमी, दहेज प्रथा, स्कूलों की दूरी एवं स्कूलों में पेयजल व शौचालयों जैसी आधारभूत संरचनाओं की कमी आदि ऐसे तत्व है जो बालिका शिक्षा के मार्ग में रोड़े अटका रहे है। सर्वप्रथम गरीबी ही वह मूलभूत कारण है जिसके कारण गरीब व निम्न जाति की बालिकाएँ निरक्षरता के अभिशाप से अभिशप्त है।

समस्या कथन–

''गोरखपुर मण्डल के कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके समायोजन क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन''।

अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् उच्च एवं मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् उच्च एवं मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता में अन्तर नहीं है।
2. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता में अन्तर नहीं है।
3. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता में अन्तर नहीं है।

शोध–प्रविधि–

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के रूप में गोरखपुर मण्डल में स्थित कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों का चयन कर उसमें अध्ययनरत् 50 बालिकाओं का चयन किया गया है। बालिकाओं के सामाजिक– आर्थिक स्तर को मापने के लिए सुनील कुमार उपाध्याय एवं अल्का सक्सेना द्वारा निर्मित 'उपाध्याय–सक्सेना सोशियो–इकोनॉमिक स्टेट्स स्केल' तथा समायोजन क्षमता से सम्बन्धित आँकड़े एकत्रित करने हेतु डॉ0 ए0के0पी0 सिंह और डा0 आर0पी0 सिंह के समायोजन क्षमता सूची का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् उच्च एवं मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता का अध्ययन करना।

H_1 कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् उच्च एवं मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता में अन्तर है।

H_{01} कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् उच्च एवं मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता में अन्तर नहीं है।

तालिका – 01

कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् उच्च एवं मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी– अनुपात

क्र0 सं0	समूह	संख्या **(N)**	मध्यमान **(M)**	मानक विचलन **(SD)**	मध्यमानों का अन्तर **(M_1-M_2)**	मानक त्रुटि **(S_{ED})**	टी– अनुपात **(t-value)**	सार्थकता स्तर एवं सारिणी मान	परिणाम
1	उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर	13	39.38	5.59	1.68	2.12	0.79	0.05 (2.04)	0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक
2	मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर	20	37.70	6.49					

तालिका 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् उच्च एवं मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता का मध्यमान क्रमशः 39.38 एवं 37.70 है और मानक विचलन क्रमशः 5.59 तथा 6.49 है। तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि उक्त मध्यमानों में अन्तर के टी–अनुपात का मान 0.79 है जो स्वतंत्रांश 31 पर 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्वि पुच्छीय परीक्षण हेतु सारणी मान 2.04 से कम है, अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक है। परिणामतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्षतः कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् उच्च एवं मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता एक–दूसरे के समान है।

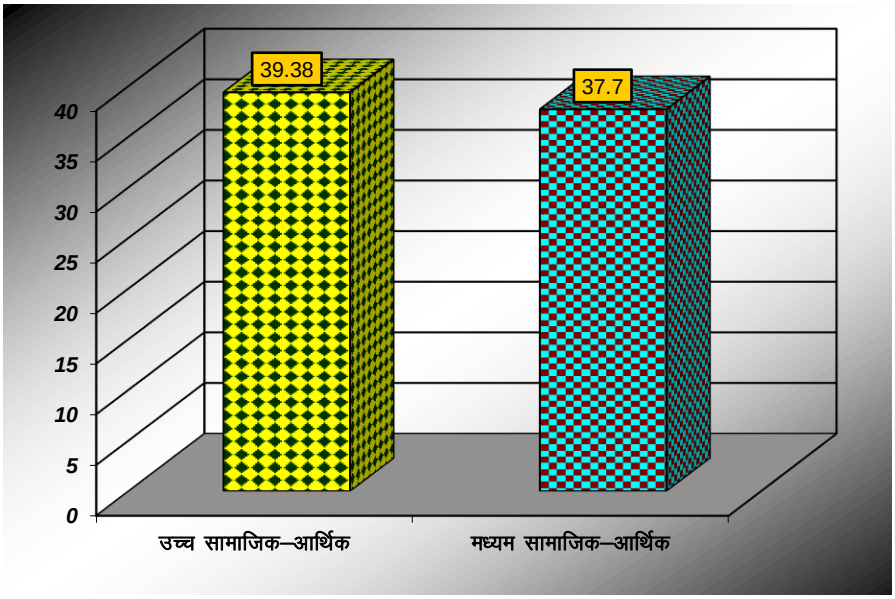

आरेख सं0 01

कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् उच्च एवं मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता का मध्यमान का आरेख चित्र

2. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता का अध्ययन करना।

H_2 कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता में अन्तर है।

H_{02} कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता में अन्तर नहीं है।

तालिका – 02ण *कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी– अनुपात*

क्र0 सं0	समूह	संख्या **(N)**	मध्यमान **(M)**	मानक विचलन **(SD)**	मध्यमानों का अन्तर **(M_1-M_2)**	मानक त्रुटि **(S_{ED})**	टी– अनुपात **(t-value)**	सार्थकता स्तर एवं सारिणी मान	परिणाम
1	उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर	13	39.38	5.59	7.67	2.36	3.25	0.05 (2.05)	0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक
2	निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर	17	31.71	7.35					

तालिका 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता का मध्यमान क्रमशः 39.38 एवं 31.71 है और मानक विचलन क्रमशः 5.59 तथा 7.35 है। तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि उक्त मध्यमानों में अन्तर के टी–अनुपात का मान 3.25 है जो स्वतंत्रांश 31 पर 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्वि पुच्छीय परीक्षण हेतु सारणी मान 2.05 से अधिक है, अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। परिणामतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्षतः कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता एक–दूसरे से भिन्न है अर्थात् उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं की समायोजन क्षमता निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं की अपेक्षा उच्च है।

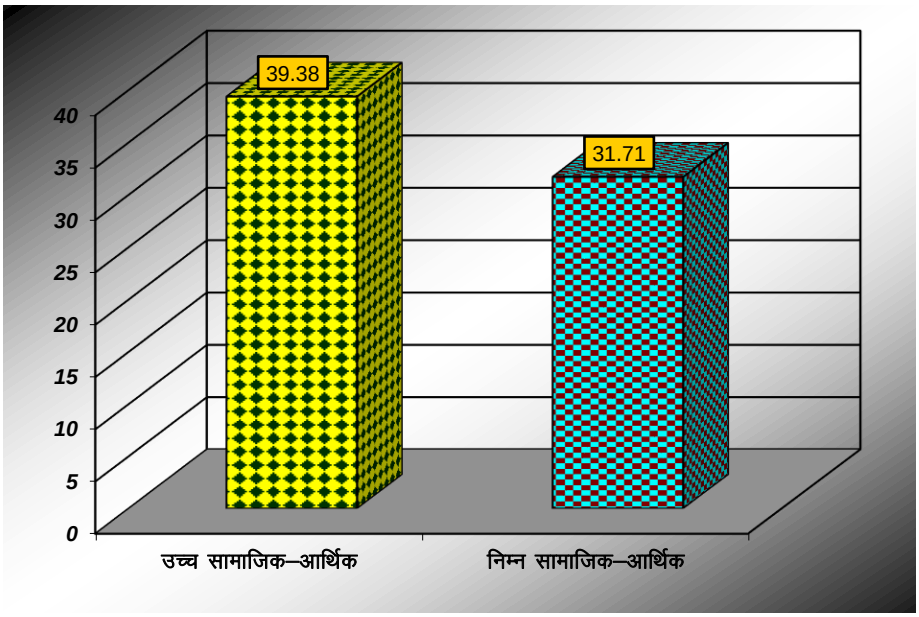

आरेख सं0 02

कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता का मध्यमान का आरेख चित्र

3. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता का अध्ययन करना।

H_3 कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता में अन्तर है।

H_{03} कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता में अन्तर नहीं है।

तालिका – 03ण *कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी– अनुपात*

क्र0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक	मध्यमानों	मानक	टी–	सार्थकता	परिणाम

सं0		(N)	(M)	विचलन (SD)	का अन्तर (M_1-M_2)	त्रुटि (S_{ED})	अनुपात (t-value)	स्तर एवं सारिणी मान	
1	मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर	20	37.70	6.49	5.99	2.30	2.60	0.05 (2.03)	0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक
2	निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर	17	31.71	7.35					

तालिका 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता का मध्यमान क्रमशः 37.71 एवं 31.71 है और मानक विचलन क्रमशः 6.49 तथा 7.35 है। तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि उक्त मध्यमानों में अन्तर के टी–अनुपात का मान 2.60 है जो स्वतंत्रांश 31 पर 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्वि पुच्छीय परीक्षण हेतु सारणी मान 2.05 से अधिक है, अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। परिणामतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्षतः कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता एक–दूसरे से भिन्न है अर्थात् मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं की समायोजन क्षमता निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं की अपेक्षा मध्यम है।

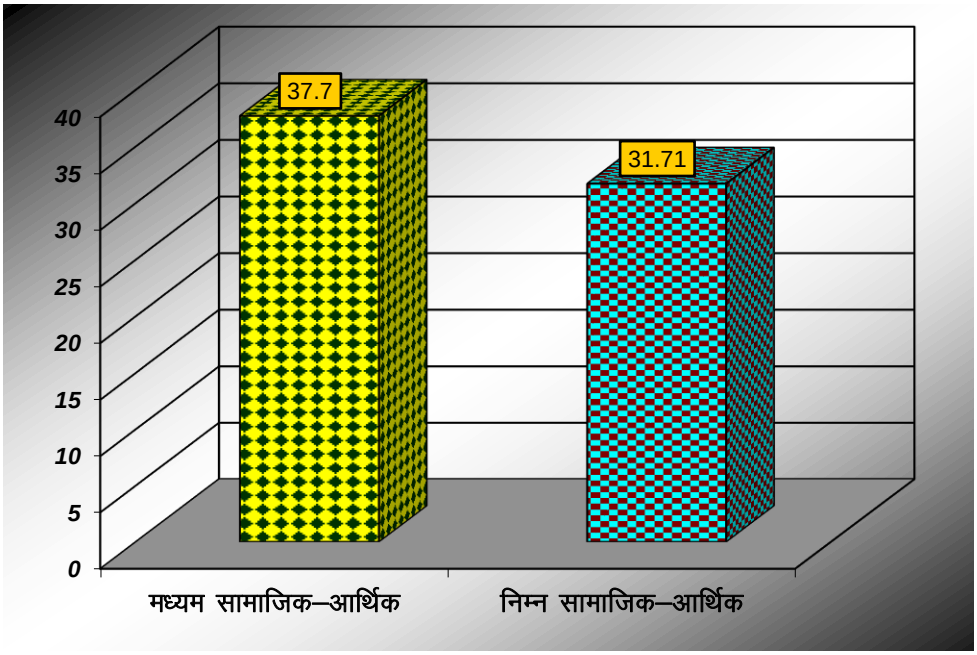

आरेख सं0 03ए *कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता का मध्यमान का आरेख चित्र*

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् उच्च एवं मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन क्षमता निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं की अपेक्षा उच्च है अर्थात् कहा जा सकता है कि सामाजिक–आर्थिक स्तर का बालिकाओं के समायोजन क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

जहाँ तक कहा जा सकता है कि सामाजिक–आर्थिक स्तर एक ऐसा कारक होता है जिसका प्रभाव बच्चों के लगभग समस्त मनोवैज्ञानिक चरों पर सकारात्मक रूप से पड़ता है। जैसा कि सब प्रकार से समायोजित व्यक्ति वह होता है जो पहले तो अपने आपसे सन्तुष्टि और समायोजित हो तथा दूसरे अपने चारों ओर फैले वातावरण या परिवेश से उसका सही तालमेल हो। इस दृष्टि से समायोजन के क्षेत्रों की व्यक्ति तथा उसके वातावरण में ही निहित माना जाना चाहिये। एक व्यक्ति की दुनिया जहाँ उसके अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य तथा व्यक्तित्व के महत्त्वपूर्ण पहलुओं के इर्द गिर्द घूमती है वहाँ उसे अपने सामाजिक परिवेश तथा काम–काज के क्षेत्रों में भी समायोजित होने की आवश्यकता पड़ती है।

अतः विद्यालय में ऐसा वातावरण स्थापित करना चाहिए जिससे मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की बालिकाओं की समायोजन क्षमता में वृद्धि हो सकें तथा शिक्षा में रूकावट न आ सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अधिम्बो एट ऑल (2011). द रिलेशनशिप एमंग स्कूल एडजेस्टमेण्ट, जेण्डर एण्ड ऐकेडमिक एचिवमेण्ट एमांग्स्ट सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन किसुमु डिस्ट्रिक केन्या, *जर्नल ऑफ इमर्जिंग ट्रेण्ड्स इन एजुकेशनल रिसर्च एण्ड पॉलिसी स्टडीज*, 2(6), पृ0 493–497
- ओमप्रकाश (2013). माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में अनुशासन, आत्म–प्रत्यय एवं समायोजन का अध्ययन, शोध–प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझनूं, राजस्थान।
- एमैनुलडी (2013). एडजेस्टमेण्ट एमंग स्कूल गोइंग एडोलसेन्ट्स ए स्टडी इन उन्नाथुर विलेज अनुर ब्लाक, कोयम्बटूर डिस्ट्रीक्ट, *आई.जे.एच.एस.एस.आई.*, वॉल्यूम–2, इश्शू–1, पृ0 7–12
- कौर, देवेन्द्र (2018). माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय, सामाजिक अभिक्षमता तथा समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, *चेतना इण्टरनेशनल एजुकेशनल जर्नल*, वॉल्यूम–I, पृ0 204–209
- कुमारी, पुष्पा (2016). माध्यमिक स्तर के एकल एवं संयुक्त परिवारों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति, समायोजन, नैतिक मूल्यों एवं आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, शोध–प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझनूं, राजस्थान।
- कुमारी, पुष्पा (2016). माध्यमिक स्तर के एकल एवं संयुक्त परिवारों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति, समायोजन, नैतिक मूल्यों एवं आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, शोध–प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझनूं, राजस्थान।
- कुन्दू, मौमिता एवं अन्य (2015). एडजेस्टमेन्ट ऑफ अण्डरग्रेजुएट स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू देयर सोशल इंटेलीजेन्स, *अमेरिकन जर्नल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च*, वाल्यूम–3, नं0 11, पृ0 1398–1401